

---

Sanskrit verses for Sanskrit day

—  
—  
संस्कृतदिवसनिमित्तं संस्कृतस्तुतिदशकम्  
—  
—

Document Information



---

Text title : saMskRRitadivasanimittam

File name : saMskRRitadivasanimittam.itx

Category : misc, sAhitya, dashaka

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Vrajakishora Tripathi

Transliterated by : Vrajakishora Tripathi

Proofread by : Vrajakishora Tripathi

Latest update : December 26, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



संस्कृतदिवसनिमित्तं संस्कृतस्तुतिदशकम्



- यत् संस्कृतं देवपुरस्य भाषा  
वेदस्य भाषा मुनिलोकभाषा ।  
पुराणभाषा स्मृतितत्त्वभाषा  
संस्कारभाषा च पवित्रभाषा ॥ १ ॥
- सत्कर्मभाषा हितकर्मभाषा  
जीवस्य भाषा गृहशुद्धभाषा ।  
तीर्थस्य भाषाखिलतत्त्वभाषा  
विमुक्तिभाषा परिसिद्धभाषा ॥ २ ॥
- धर्मस्य भाषा विभवस्य भाषा  
कामस्य भाषा खलु मुक्तिभाषा ।  
सुनीतिभाषा नृपनीतिभाषा  
भाषासु शिष्टा सुजनस्य भाषा ॥ ३ ॥
- रामायणस्था मधुरस्य भाषा  
सेयं महाभारतलेखभाषा ।  
आयुर्गमा दर्शनशास्त्रभाषा  
सहित्यिका व्याकरणोक्तभाषा ॥ ४ ॥
- काव्यस्य भाषा रससृष्टिभाषा  
ज्ञानस्य भाषा कविवृन्दभाषा ।  
सद्भावभाषा गुणराशिभाषा  
विनम्रभाषा सरलस्य भाषा ॥ ५ ॥
- स्नेहस्य भाषा विबुधस्य भाषा  
सम्मानभाषा शुभदायिभाषा ।  
राज्ञां च भाषा सचिवस्य भाषा  
विज्ञानभाषा ग्रहचक्रभाषा ॥ ६ ॥

भाषाभिवन्द्या सुरकार्यदक्षा  
दुर्दण्डदण्ड्या यमचाण्ड्यखण्ड्या ।  
अभेदभेद्याखिलकार्यसाध्या  
त्रितापतापा भवसिन्धुनौका ॥ ७ ॥

भद्रातिभद्रा नमनीयभावा  
क्रोधेन हीना समभावपूर्णा ।  
प्रशान्तभावा कमनीयरूपा  
समग्रविश्वस्य समृद्धिकामा ॥ ८ ॥

आशीःप्रदात्री बहुभाग्यदात्री  
प्रफुल्लदात्री जनशौर्यदात्री ।  
सौन्दर्यकर्त्री सुरराज्यदात्री  
यशोविभर्त्री गुणभाण्डधर्त्री ॥ ९ ॥

हे संस्कृतज्ञा! यदि संस्कृतं नः  
गृहे सुतानां वदने सदा स्यात् ।  
क्रमेण तत् भास्यति सर्वविश्वे  
तदा जनानां सुखदा भवेत् सा ॥ १० ॥

इति श्रीब्रजकिशोरत्रिपाठीविरचितं संस्कृतस्तुतिदशकं सम्पूर्णम् ।

---

—  
*Sanskrit verses for Sanskrit day*

pdf was typeset on February 2, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

